Indo-French Joint Venture in Mineral Exploration

*87. SHRI RAMDAS AGARWAL: Will the Minister of MINES be pleased to state:

(a) whether India and France have recently signed any Protocol identifying new projects in mineral exploration and development by French funding worth 700 million francs (Rs. 472 crores) as reported in the 'Times of India', dated 16th November, 1995 in its New Delhi edition;

(b) whether the Indo-French Working Group on mineral exploration and development discussed any new joint ventures in Orissa as well as in Malagasy for nickel and in Togo for zinc etc.; and

(c) if so, the details thereof including the cost to be borne by France?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF MINES (SHRI GIRIDHAR GAMANG): (a) and (b) Yes, Sir.

(c) The Meeting of the Indo-French Working Group on Mineral Exploration and Development has identified a project for obtaining technical assistance for detailed exploration of Platinum Group of Metals in Orissa. The estimated cost of this project is 4.2 Million French Francs. The project has been posed for financing through loans at concessional rates from the Government of France under the Indo-French Financial Protocol.

The Meeting has also discussed the following projects for possible joint ventures between Hindustan Zinc Limited and BRGM/LaSource of France:

(i) Nickel prospects in Malagasy; and

(ii) Zinc prospects in Togo.

The above two proposals are at a very preliminary stage.

गुजरात में सूखे और बाढ़ की समस्याएं

*88. **श्री गोपाल सिंह जी० सोलंकी:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या गुजरात में सूखा और बाढ़ की समस्याएं आम बात हो गई हैं;

(ख) यदि हां, तो राज्य के सूखा-प्रवण और बाढ़-प्रवण क्षेत्रों के नाम क्या-क्या हैं;

(ग) क्या सौराष्ट्र-कच्छ क्षेत्र इन समस्याओं से अधिक प्रभावित हैं;

(घ) सरकार द्वारा इस समस्या से निपटने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

कृषि मंत्री (श्री बलराम जाखड़): (क) गुजरात के कुछ भागों में अक्सर सूखा पड़ता है और बाढ़ आती है।

(ख) राज्य में कच्छ और जामनगर जिले और अहमदाबाद, अमरेली, बनासकांठा, भरूच, भावनगर, जूनागढ़, मेहसाणा, पंचमहल, राजकोट, सानरकंठा, सुरेन्द्रनगर, डांग, बड़ोदरा तथा वलसाड़ जिलों के कुछ भाग सूखा-प्रवण हैं। बलसाड़, डांग, सूरत जिले और भरूच, बड़ोदरा, अहमदाबाद, राजकोट तथा जूनागढ़ जिलों के कुछ भाग बाढ़-प्रवण हैं।

(ग) जी, हां।

(घ) और (ङ) गुजरात के 16 जिलों में 99 चिन्हित ब्लाकों में सूखा-प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम और मरूस्थल विकास कार्यक्रम कार्यान्वित किए जा रहे हैं, ताकि सूखे के प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सके और मरूस्थलीकरण को रोका जा सके। बाढ़ नियंत्रण के लिए किए जा रहे उपायों में जलाशयों और तटबंधों का निर्माण, जल निकास प्रणाली में सुधार और जलधारा प्रबन्धन शामिल है। तात्कालिक राहत कार्यों और पुनर्वास उपायों के लिए, 1995-96 में 131.76 करोड़ रुपए की आपदा राहत निधि की व्यवस्था की गई है।